2020-21

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA — J-Gate INDEXED — DataCite — JIF — OPEN ACCESS — OAJI — oi

RELEVANCE OF MUSHARRAF ALAM ZOUKI'S NOVEL 'SHAHAR CHUP HAI'

SUNIL KAMBLE
Assistant Professor, Department of Hindi, Shivaji College, Hingoli, Maharashtra, India.
sunilskamble1532@gmail.com

ORCID
https://orcid.org/0000-0003-0732-1256

Received: 26.07.2020 Reviewed :30.07.2020 Accepted: 09.08.2020

ABSTRACT

The youth used to wander from place to place for employment I used to go around different offices looking for a job after seeing the advertisement in the daily newspaper. Disappointed, helpless and broke Suffered terrible tragedy due to dirty conspiracies of political leaders He is forced to think of challenging this system by walking on the wrong path and walking on the dirty path to live life. And in the end, he leaves the wrong path and comes to the right path and lives.

KEYWORDS: Disappointment, helplessness, struggle, pain, tragedy, resentment towards the system

मुशर्रफ आलम ज़ौकी के उपन्यास 'शहर चूप है' उपन्यास की प्रासंगिकता

शोध सार-

युवा वर्ग रोजगार लिए दर-दर भटकता रहता था | हर दिन के समाचार पत्र में आये विज्ञापन को देखकर नौकरी की तलाश में अलग-अलग दफ्तर के चक्कर लगाता था | निराश, हतबल होकर टूट जाता था | राजनैतिक नेताओं के गंदे षड़यंत्र के कारण भयानक त्रासदी को भोगता था | मजबूरण वह गलत रास्ते पर चलकर इस व्यवस्था को चुनौती देने का एवं जीवन जिने के लिए गंदे रास्ते पर चलने की सोचता रहता है | और अंत में वह गलत रास्ता छोडकर सहीं राह पर आकर जीवन यापन करता है।

मुख्य शब्द : निराश, हतबलता, संघर्ष, पीडा, त्रासदी, व्यवस्था के प्रति आक्रोष।

'शहर चुप है' मुर्शरफ आलम ज़ौकी द्वारा लिखित उपन्यास वर्तमान में बिगडते हालात को देखकर बिलकुल प्रासंगिक है | इस उपन्यास में भारतवर्ष में सामाजिक और धार्मिक एकता को बनाए रखना कितना जरुरी है उसका सही चित्रण किया है | समाज जीवन को बारीकी से देखते हुए उसकी सुंदर अभिव्यक्ति जौकी जी की कलम से निकली है | इस उपन्यास का काल 1975 के आसपास का है | जब की उस वक्त ना तो टी.वी. था, न इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के हंगामे थे | और न कॉल सेंटर थे न युवाओं को बढते रोजगार के अवसर प्राप्त थे | उस जमाने में न युवाओं को बढते रोजगार के चौखट पर खड़े युवक अचानक ही अपराध की दुनिया में मुड जाते है | जौकी जी यहाँ अपराध और अपराधी बनानेवाली मानसिकता से जूझती नई पीढ़ी का विश्वव्याप्त चिंतन उपन्यास को एक नया आयाम दे जाता है | इस उपन्यास में फँटासी न होकर इसमें अपने समय की फँटासी अभिव्यक्त हुई है | इस उपन्यास की खासियत यह है कि समय के बहाव में भी अपनी विशेष पहचान रखते है | और कभी पुराने नहीं होते, प्रासंगिक होते है |

बीसवीं शतक की आठवे दशक का माहौल भी आज की तरह ही खौफनाक था | युवा वर्ग रोजगार लिए दर-दर भटकता रहता था | हर दिन के समाचार पत्र में आये विज्ञापन को देखकर नौकरी की तलाश में अलग-अलग दफ्तर के चक्कर लगाता था | निराश, हतबल होकर टूट जाता था | राजनैतिक नेताओं के गंदे षड़यंत्र के कारण भयानक त्रासदी को भोगता था | मजबूरण वह गलत रास्ते पर चलकर इस व्यवस्था को चुनौती देने का एवं जीवन जिने के लिए गंदे रास्ते पर चलने की सोचता रहता है |

वर्तमान भारत वर्ष में वहीं हो रहा है | देश की अर्थव्यवस्था टूटने के कगार पर पर आयी है | धर्म के नाम पर हर संभव आपस में बाँटने का कार्य राजनैतिक नेता लोग कर रहे है | संकुचित मनोवृति के कारण धर्मांधता को बढावा

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)
SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA
ISSN 2277-8071

दे रहे है | आजही नहीं तो बरसो से भारत माता को तोडने की कोशिश कर रहे है | अनेकता में एकता को तार-तार करने का उनका प्रयास आज़ादी से लेकर अब तक हो रहा है |

किसी एक छोटीसी वारदात को लेकर देश को दंगो की आग में झोंका जा रहा है | मॉब लिचिंग करके अमानवियता का गंदा असली चेहरा सामने आ रहा है | यथार्थ न दिखाकर मन गढंत बाते रिपोर्टर के पास पहँचा रहा है | आज का बिकाऊ मिडिया उसको मिर्च मसाला लगाकर बिभस्त प्रसारण कर रहा है | हिन्दू और मूसलमान एवं अन्य धर्मों कों बाँटने का कार्य बढ़ा चढ़ाकर बाते कर रहा है | 'शहर चुप है' उपन्यास की प्रासंगिकता में लेखक कहते है, "दंगा देश का रक्तरंजित चेहरा, निराश की फसलें, सरकार असंतुष्ट रवैया और समाचार पत्रों की सुर्यायों में नजर आनेवाली मौत..... नौजवान पर लाठी चार्ज"[1]

इस तरह कल भी और आज भी मिडीया भ्रम फैला रही है | उनके पास नौजवानों को रोजगार दिला सके इतना विज्ञापन अथवा समाचार नहीं है | सिर्फ और सिर्फ साम्प्रदायिकता फैलानेकवाली चिजें है देश एवं समाज को बाँटने की कोशिश कर रहे है | 90% मिडिया को खरीद लिया गया है | इनको देश के बारें में कुछ भी लेना-देना नहीं है | समाज को भ्रमित करने में सब राजनैतिक नेता लोग जूटे है | आम-आदमी का जीवन बद से बदतर किया जा रहा है |

युवाओं को देश को भविष्य कहा जाता है | और यह भविष्य होटलों में केवल एक चाय की प्याली का कर्जदार बन जाता है | आवारा गर्दी करता हुआ गली, मुहल्ले मे घूमता नजर आ रहा है | बॉलीवुड की रंगीली फिल्मे देखकर उसे असली जिंदगी में लाने की कोशिश कर रहा
है | अपहरण, बलात्कार चोरी के नए-नए तरिकों को अपना रहा है | लडके एवं लडकियों का अपहरण कर उसके बदले में पैसों की माँग मजबूर युवा वर्ग कर रहा है | बहूत सारी उपाधियाँ पाकर उसे नौकरी या रोजगार नही मिल रहा है | इसका सही चित्रण जौकी जी ने अच्छे ढंग के साथ किया है - "इन अखबारों में रोज के विज्ञापन नही छपते, मौत छपती है, डकैती छपती है, कत्ल छीना-झपटी, रेप की घटनाएँ छपते है | इन समाचारों को ध्यान से देखो अनिल..... और देश का भविष्य अर्थात अपने बारे में स्वयं फैसला कर लो"[2]

यह उपन्यास दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - पहला भाग अनिल का परिवार है और दूसरे भाग में अनिल और शास्त्रीजी का सामाजिक जीवन है | इस उपन्यास के तीन मुख्य पात्र है | एक अनिल उसका मित्र रघुवीर और तीसरा है मुकेश |

'शहर चूप है' उपन्यास में सामाजिक जीवन का अत्यंत सटीक वर्णन किया है | अनिल और रघूवीर दोनों बहूत गहरे दोस्त है | दोनों बेरोजगारी का शिकार है, और दिनभर रोजगार की तलाश में शहर की खाक छानते फिरते है | घर में अनिल की बहन कक्कू सप्ताह से बिमार पडी थी | अनिल कॉलेज गया था, मुहल्ले का एक आदमी अनिल को कक्कू की हालात गंभीर होने की सूचना देता है जब अनिल घर आता है तो वह, देख रहा है - "माँ बेहोश पडी थी, पिताजी की हिचकियाँ सारे कमरे में गूँज रही थी | शामु फूटी-फूटी आँखो से उमड़ आऐ आँसुओं को रोकने की नाकाम कोशिश कर रहा था, आँगन में एक ओर कक्कू की चादर ढ़की हुई लाश पड़ी थी |"[3]

अनिल के घर का माहौल भयानक दुख से व्यतित था | अनिल दुख से एवं इस व्यवस्था से हताश होकर बैठा था | उसे अंदर-ही अंदर बहूत गुस्सा आ रहा था | उसका घर आकाश भेदी चिखों से गूँज रहा था | पिताजी इस भयानक दुख से बिलकुल टूट चुके थे | बेटी जो उनके आँखो का तारा थी, बहूत लाडली थी , प्यारा थी | उसकी लाश को देखकर फूट-फूटकर रोते हुए धैर्य नही रख पाये बेहोश हो गये थे - "जब होश आया तो पिताजी जोर-जोर से चिल्ला रहे थे |.....बेटे श्यामू तेरी दीदी चली गई | मेरी दुनिया लूट गई लोगों..... मेरी हँसी छिन गई, मेरा सब कुछ थी वह वो कोई ले आओ, कोई ले आओ मेरी कक्कू को |"[4]

अनिल के पिता मास्टरजी थे | कक्कू के लाश को देखकर पागल से हो गये, होश खो बैठे, चिख-चिखकर उनकी आवाज बंद हो गई | बाप-बेटी के ममत्व और प्रेम का रिश्ता बहूत गहरा होता है | बेटी के इस एकाएक चले जाने से वे संभल नहीं पाए | अंदर ही अंदर से पूरी तरह टूटते है | अपनी अंदर की वेदना इन शब्दो में अभिव्यक्त करते है - "कक्कू मैं पुरी तौर पर टूट गया हूँ | तूमसे पहले मुझे जाना था पगली | तेरी तो शादी होनी थी | पूरी जिंदगी बाकी थी..... अभी तुने देखा ही क्या थाकि सांस-सांस का उधार जोडकर ओझल हो गई..... |"[5]

जवान बेटी के मौत पर बाप की जो हालत होती है उसका विदारक चित्रण ज़ौकी जी ने किया है | कक्कु के भाई थे एक श्यामकुमार और दूसरा अनिल | अनिल बडा भाई है उन्होंने एम.ए की पढ़ाई पूरी की है | तथा नौकरी की तलाश में रहता है | कक्कु की मौत ने उसे गुँगा कर दिया है | अनिल और रघूवीर दोनों गहरें दोस्त है, दोनों बेरोजगार है | दोनों के घरों में अंधेरा है | अनेक समस्याएँ बन पडी है | उन समस्याओं का हल निकालने के लिए सुबह ही घर छोड डाक ऑफिस, लायब्ररी एवं समाचार पत्र झाकते रहते है | कहीं जिंदगी की

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2249-9071

COLLEGE SHIVAJI HINGOLI

गोटी फीट हो जाये लेकिन हर दिन झाँकने के बाद निराश होकर घर लौटते थे |

अनिल और रघूवीर अपने भविष्य के बारे में चिंतीत है | अपने देश की व्यवस्था के प्रति उनके मन में आक्रोश है | जौकी जी ने 'शहर चूप है' उपन्यास में जो यथार्थ वर्णन किया है आज वही स्थिती वर्तमान में भयानक हो चूकी है | आज देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह टूट चूकी है | पुरे देश को धर्म के नाम पर बाँटने की जी तोड कोशिश हो रही है | गंदी राजनीती का खेल सत्ता में बेठे राजनेता खेल रहे है | देश को दंगो की आग में झोंकने की हरदम कोशिश कर रहे है , एवं मस्त तमाशा देख रहे है | आज भी राजनेता बेरोजगारों को बहकाते हुए बुरे रास्ते पर चलने के लिए मजबूर करते है |

'शहर चूप है' उपन्यास में अनिल और रघूवीर मजबूरण एक लडकी के अपहरण का प्लान बना देते है | जिवन में पहली बार गलत रास्ते पर चल रहे है | सारा शहर चूप है - क्योंकी शहर के स्थानीय कॉलेज के एक छात्र की हत्या किसी ने कर दी है | पुरे शहर में हंगामा हो गया है | शहर के सभी कॉलेजों के छात्रों ने उसके विरोध में जुलूस निकाला है | पुरा मार्केट बंद है | पुलीसवाले हर चौराहे पर तैनात है | हर तरफ सुनसान माहौल है | रघूवीर अपना मन्सुबा अनिल के सामने रखता है एवं अनिल तैयार हो जाता है | शास्त्री की लडकी मिना आधुनिक लडकी है | वह बिल्कुल निडर है | उसका सही चित्रण मुशर्रफजी ने अच्छे ढंग से किया है - "लडकी स्वयं अपना अपहरण किऐ जाने की बात कर रही थी"... "बोलो ना... आज मुझे अपहरण करने आये हो न ? लडकी शरारत से मुस्कुरा रही थी, मुझे अच्छी तरह मालूम है, ऐसी जगह पर अकेले पार्क में किसी लडकी के पास आने का क्या उद्देश हो सकता है |"[6]

अपहरणकर्ता अनिल और रघूवीर मीना के इस व्यवहार से हैराण हो जाते है | दोनों मीना के रवैये से सोच और चिंता में डूबे जाते है | लडकी के भोलेपन और मासुमियत से रहस्यमय खामोश हो जाते है | लेकिन मीना नटखट लडकी है उनके साथ शरारत करती है | दोनों पर शाब्दिक आक्रमण करती है | उसमें अनील और रघूवीर घायम होते है | रघूवीर गाडी में बैठकर वहाँ से खिसकता है | मीना अनिल को लेकर घर आती है और घरवालों से परिचय करवाती है | अनिल और मीना के परिवार वालों के साथ घरेलू रिश्ते बनते है | अनिल के पिताजी के मन में जो गलतफहमी थी उसे दूर करता है | अनिल शास्त्रीजी के घर का अभिन्न अंग बन जाता है | उपन्यासकार ने उसका सुन्दर चित्रण किया है, "बेटा मौका निकालकर आ जाया करो | देखा कैसे खुश हो जाते है | यहाँ लडके की सूरत में कोई नही है नं.....इसलिए मैने उनपर किसी तरह की पाबंदी नहीं लगाई है |"[7]

आज जिस प्रकार की व्यवस्था गूँगी हो चूकी है उसका यथार्थ दर्शन हमें हो रहा है | बेकारी, बेरोजगारी की समस्या भयानक रुप ले चूकी है | युवावर्ग इस सडी गली व्यवस्था से तंग हो चुका है और वह गलत रास्ते पर मजबूरण जा रहे है | 'शहर चुप है' उपन्यास में अनिल के पिताजी अनिल के लिए परेशान है | अनिल की बेरोजगारी की वजह से विवशता बढती जा रही है | अनिल नौकरी पाने के लिए दर-दर भटकता है लेकिन नौकरी थोडे ही उसके हाथ में है | वह तो इस व्यवस्था एवं सरकार के हाथ में है |

बेरोजगारी की इस गंभीर समस्या का चित्रण रघूवीर पर पडे दु:ख के पहाड से होता है | माँ का मर जाना एवं अपाहीज बहन का घर छोडकर चले जाने से रघूवीर पूरी तरह से टूटता है | और अंतत: वह घर बेचकर इस शहर को छोडकर चला जाता है | कई दिनों बाद अपनी जीवन की त्रासदी को किताब में बयाँ करता है और बडा लेखक बनता है |

निष्कर्ष

मूलत: आज हमारे देश में राजनैतिक उदासिनता एवं घिनौनी राजनीति के कारण युवा वर्ग हताश हो चुका है | बहुत सारी डिग्रीया लेकर वह दर-दर की ठोकर खा रहा है | एम.ए, पीएच.डी., नेट, सेट, इंजीनीअर की बहूत सारी उपाधियाँ एवं परिक्षाएँ पास होने के बावजूद चपराशी पद के लिए आवेदन पत्र भर रहा है | पापी पेट एवं घर की जिम्मेदारीयाँ को अपने कंधे पर लेने के लिए चपराशी बनने के लिए तैयार है | लेकिन प्रशासन व्यवस्था उसे वह नौकरी भी देने के लिए उदासीन है | बेरोजगार युवा-युवतीयाँ आजादी के सत्तर साल बाद भी कोंसो मिल दूर है | जनसंख्या में निरंतर वृध्दी के कारण देश का संतुलन बिगड रहा है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था प्रायोगिक नहीं है | लघु उद्योंगों का नष्ट किया जा रहा है | शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन करना अत्यंत जरुरी है | सरकारने तकनिकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना जरुरी है | शिक्षण व्यवस्था में सुधार करना आवश्यक है | सरकार ने नयी योजनाएँ एवं प्रशिक्षण केंद्र बढाने चाहिए | शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने चाहिए और विकास की नीति बनानी चाहिए ताकि बेरोजगारी की समस्या जड़ से मिटा सके |

संदर्भ सूचि

1. मुशर्रफ आलम ज़ौकी, शहर चूप है, पेज - 20
2. पूर्वोक्त, पेज - 20

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

3. पूर्वोक्त, पेज - 16
4. पूर्वोक्त, पेज - 17
5. पूर्वोक्त, पेज - 17
6. पूर्वोक्त, पेज - 35
7. पूर्वोक्त, पेज - 53

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)